International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 5 Issue 3 ||March. 2016 || PP.63-65

एक और जिंदगी में संवेदना और शिल्प

डॉ0 महेंद्र पाल सिंह
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
सेठ पी0सी0 बागला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हाथरस।

भूमिका– एक और जिंदगी कहानी को मोहन राकेश की बहुत ही प्रसिद्ध कहानी माना जाता है।आप नयी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। आप पर अस्तित्ववादी जीवन दर्शन का गहरा प्रभाव है। आपकी कहानियों में स्त्री पुरुष के बदलते संबंधों और टूटते हुए परिवारों के बीच अधूरेपन की त्रासदी झेल रहे व्यक्तियों की मनोदशा का चित्रण है। इस दृष्टि से एक और जिंदगी सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक कहानी है।

प्रमुख शब्द– त्रासदी, अभाव, व्यक्तित्व,, पितृत्व, पारिवारिक, जिंदगी, निर्थकता, अनिर्णय।

प्रस्तावना– एक और जिंदगी कहानी का प्रमुख पात्र प्रकाश है जो संबंधों के अभाव की त्रासदी झेल रहा है। उसका विवाह बीना नामक महिला से होता है। दोनों पति पत्नी का स्वभाव विपरीत होने के कारण दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहता है। बीना बहुत पढी लिखी लड़की है जो प्रकाश से ज्यादा रुपए कमाती है। उसमें बहुत अहंकार है वह हर तरह से स्वच्छंद रहना चाहती है। लेकिन उसका यह रवैया प्रकाश को बिल्कुल भी पसंद नहीं है। वह बीना के साथ सहज नहीं है।इस स्थिति से निजात पाने के लिए वह दोनों आपसी सहमति से वैवाहिक संबंध विच्छेद कर लेते हैं। उनका बेटा पलाश (पाशी) अपनी मां बीना के साथ रहता है। इस कारण कुछ दिन प्रकाश बहुत बड़ी दुविधा में हताश और निराश रहता है।बाद में वह दूसरी शादी करने का फैसला करता है । प्रकाश के दोस्त जुनेजा की छोटी बहन निर्मला जो देखने में बहुत सुंदर थी उससे शादी करने का फैसला करता है। निर्मला 26–27 साल की होने के बावजूद सिर्फ 18–19 साल की लगती थी । वह अधिक पढी लिखी नहीं है। बीना की तरह उस पर वह रौब नहीं जमाती है। विवाह के बाद प्रकाश को पता चलता है कि निर्मला मानसिक रूप से विक्षिप्त है। उसके साथ रहना जीवन को और अधिक त्रासद बनाता है। रोज–रोज की पारिवारिक कलह से छुटकारा पाने के लिए एक दिन बिना बताए प्रकाश घर छोड़कर भाग जाता है। निर्मला ने कई तरह से दबाव बनाया कि वह घर वापस आ जाए लेकिन प्रकाश घर नहीं लौटता है। अचानक एक दिन उसे अपने घर के सामने बीना और पलाश दिखाई दिए जो वहां कुछ दिनों के लिए घूमने आए थे। उसे दो तीन दिनों तक कुछ घंटे पलाश के साथ बिताने को मिलते हैं जिससे उसके भीतर पिता और पारिवारिक प्यार की भूख बढने लगी। किन्तु जिंदगी बहुत आगे बढ़ चुकी थी और उसे वापस लौटाना उन दोनों के लिए संभव नहीं था। बीना और प्रकाश अपने घर वापस लौट गए तदुपरांत पलाश अपने को अकेला पाता है। यहीं से वह मानसिक रूप से परेशान रहने लगता है। उसने जो निर्णय लिया है वह भी एक बहुत बड़ी त्रासदी है। प्रस्तुत कहानी में मनुष्य के एक गलत निर्णय से उसका जीवन कितना एकाकी और बदहाल हो जाता है इसी समस्या को समझने का विनम्र प्रयास किया गया है।

मोहन राकेश ने अपनी कहानी और नाटकों में अधिकांश शहर के मध्यम वर्गीय परिवार के स्त्री पुरुष के बदलते हुए रिश्तों को कहानी का विषय बनाया है।इसकी पुष्टि करते हुए वह स्वयं कहते हैं कि मेरी कहानियां संबंधों के टूटने से परेशान व्यक्तियों की त्रासद नियति को व्यक्त करती हैं इस कहानी में भी यही दिखाया गया है। कहानी के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि कहानीकार एक जिंदगी से संतुष्ट नहीं है। यह असंतोष इसलिए है कि मनुष्य के पास एक ही जीवन है उसी में प्रयोग करने हैं और उन प्रयोगों में ही जीना है। व्यक्ति निर्णय चाहे कितनी भी समझदारी से करे लेकिन लेकिन इस निर्णय में कहीं न कहीं चूक हो ही जाती है जिससे असंतोष पैदा होता है यही समस्या इस कहानी के मुख्य पात्र प्रकाश की है। उसने अपने जीवन में जो भी निर्णय लिए वे सब गलत थे,उन निर्णयों को सुधारने और ठीक करने के लिए उसके पास दूसरी जिंदगी नहीं है। वह सोचता है – क्या सचमुच पहले की जिंदगी को मिटाकर इन्सान नए सिरे से जिंदगी शुरू कर सकता है? जिंदगी के कुछ वर्षों को वह एक दुरू स्वप्न की तरह भूलने का प्रयत्न कर सकता है?कितने इन्सान हैं जिनकी जिंदगी कहीं न कहीं, किसी न किसी दोराहे से गलत दिशा की ओर भटक जाती है। क्या यह उचित नहीं है कि इन्सान उस रास्ते को बदलकर अपने को सही दिशा में ले जाए? आखिर आदमी के पास एक ही तो जिंदगी होती है– प्रयोग के लिए भी और जीने के लिए भी।तो क्यों आदमी एक प्रयोग की असफलता को जिंदगी की असफलता मान ले।[1]

एक और जिंदगी में जीवन के प्रति जो निर्थकता बोध है, वह एक और जिंदगी की तड़प को उभारता है। व्यक्ति को यह एहसास होना कि उसे एक जीवन मिला था उस जीवन को भी मानसिक अपरिपक्वता के कारण खराब कर लिया जीवन व्यर्थ हो गया व्यक्ति को अंदर ही अंदर घुटने के लिए विवश कर देता है।नये दौर की कहानियों में यह व्यक्ति की मूल समस्या बनकर उभरती है जो इस कहानी में मोहन राकेश ने स्पष्टता के साथ दिखाई है– उसे लगता जैसे वह जी

न रहा हो, सिर्फ अंदर ही अंदर घुट रहा हो क्या यही वह जिंदगी थी जिसे पाने के लिए उसने इतने साल अपने से संघर्ष किया था?[2]

इस निरर्थकता बोध का बड़ा कारण पारिवारिक संबंधों का टूटना है उसका। शहर का आदमी वैसे ही अकेला है उसे किसी से कोई ज्यादा मतलब नहीं रहता है। अपने सीमित संबंधों से वह खुश नहीं रहता है फलस्वरूप अकेलापन, टूट, और घुटन उसके जीवन का अटूट हिस्सा बनकर उसे तिल–तिल कर मरने को विवश करते हैं वह इसी मकड़जाल में फंसकर अपना सब कुछ समाप्त कर लेता है। संबंधों का टूटना केवल इस कहानी के पात्र प्रकाश की ही समस्या नहीं है बल्कि आज हर प्रकार से सशक्त होती हुई नारी का पुरुष के साथ सहज रूप से सामंजस्य न बिठाना भी एक बड़ी समस्या है। जो हमें आज समाज में सर्वत्र दिखाई दे रही है। शादी के कुछ दिन बाद ही पति पत्नी में अनबन हो जाती है जिससे वह अलग रहने को मजबूर हो रहे हैं। प्रकाश भी अपने विवाह के कुछ दिन बाद ही अपनी पत्नी से अलग हो गया है – ब्याह के कुछ महीने बाद से ही पति पत्नी अलग रहने लगे थे। ब्याह के बाद जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था। दोनों अलग अलग जगह काम करते थे और अपना अपना स्वतंत्र ताना बाना बुनकर जी रहे थे। लोकाचार के नाते साल छः महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे। वह लोकाचार ही इस बच्चे को दुनिया में ले आया था।[3] कहानी में यह भी स्पष्ट किया गया है कि संबंधों की यह टूटन किस प्रकार नारी की स्वतंत्र चेतना से जुड़ी हुई है– वह पहले की भूल दोहराना नहीं चाहता था, इसलिए उसकी आशंका ने उसे बहुत सतर्क कर दिया था। वह जिस किसी लड़की को अपनी भावी पत्नी के रूप में देखता, उसके चेहरे में उसे अपने पहले जीवन की छाया नजर आने लगती। हालांकि वह स्पष्ट रूप से इस विषय में कुछ भी सोच नहीं पाता था, फिर भी उसे लगता कि वह किसी ऐसी ही लड़की के साथ जीवन बिता सकता है जो हर लिहाज से बीना के उलट हो। बीना में बहुत अहंकार था, वह उसके बराबर पढ़ी लिखी थी, उससे ज्यादा कमाती थी। उसे अपनी स्वतंत्रता का बहुत मान था और उस पर भारी पड़ती थी। बातचीत भी वह खुले मर्दाना ढंग से करती थी। वह अब एक ऐसी लड़की चाहता था जो हर लिहाज से उस पर निर्भर करे और जिसकी कमजोरियां एक पुरुष के आश्रय की अपेक्षा रखती हों।[4] इस कहानी में समाज के मध्यवर्गीय लोगों का उचित समय पर उचित निर्णय न लेना भी एक बड़ी चुनौती बनकर उभरता है। एक बार जीवन में जब कोई फैसला गलत हो जाता है, फिर उसे सही करना आसान नहीं होता है। मध्य वर्ग के लोग सदैव से ही अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं। वर्तमान समय में हर व्यक्ति की इच्छा, आकांक्षाएं इतनी प्रबल हो गई हैं कि वह उन्हें पूरा करने में अपना सबकुछ न्यौछावर कर रहा है लेकिन फिर भी वह उसे प्राप्त नहीं कर पा रहा है। इससे वह सामाजिक दबाव में भी रहता है। प्रकाश की एक बड़ी समस्या अनिर्णय ही है– सोचने सोचने में दिन, सप्ताह और महीने निकलते गए।मन में आशंका उठती– क्या सचमुच पहले की जिंदगी को मिटाकर इंसान नए सिरे से जिंदगी शुरू कर सकता है?।[5] इस कहानी के माध्यम से मोहन राकेश ने केवल स्त्री पुरुष की समस्या को ही रेखांकित नहीं किया है बल्कि उन बच्चों की पीड़ा को भी प्रदर्शित किया है जिनके माता पिता किन्हीं कारणों से अलग हो गए हैं। समाज में ऐसे बच्चे बिना किसी अपराध के माता पिता और परिवार के अन्य लोगों के प्यार से वंचित रह जाते हैं। प्रकाश और बीना जब कोर्ट में तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर करने वाले थे, ठीक उसी समय एक चिड़िया के बच्चे के प्रतीक के माध्यम से लेखक ने उनके बच्चे की समस्या को बहुत ही बेबाकी से उठाया है–

कोर्ट में कागज पर हस्ताक्षर करते समय छत के पंखे से टकराकर एक चिड़िया का बच्चा नीचे आ गिरा।
'हाय, चिड़िया मर गई,' किसी ने कहा। मरी नहीं, अभी जिंदा है, कोई और बोला। चिड़िया नहीं है चिड़िया का बच्चा है, किसी तीसरे ने कहा। नहीं, चिड़िया है। नहीं चिड़िया का बच्चा है। इसे उठाकर बाहर हवा में छोड़ दो। नहीं, यहीं पड़ा रहने दो। बाहर इसे कोई बिल्ली विल्ली खा जाएगी। पर यह यहां आया किस तरह? जाने किस तरह? रोशनदान के रास्ते आ गया होगा। बेचारा कैसे तड़प रहा है! शुक्र है, पंखे ने इसे काट नहीं दिया। काट दिया होता,तो बल्कि अच्छा था।अब इस तरह लुंजें पंखों से बेचारा क्या जिएगा![6]

एक और जिंदगी कहानी में मोहन राकेश ने कथानक, चरित्र योजना और भाषा शिल्प को भी प्रमुखता के साथ दिखाया है। अन्य कहानियों की तरह यह कहानी भी कथानक की संरचना को तोड़ने वाली कहानी है। पारंपरिक कहानियों में प्रारंभ और अंत में निश्चित सूचनाएं होती थीं जो कथानक को बांधकर रखती थीं।इस कहानी का प्रारंभ और अंत दोनों क्षणिक अनुभूतियों पर आधारित हैं। इसमें न कोई आरंभ है और न कोई अंत। घटनाएं भी बहुत कम हैं केवल कहानी में घटित कुछ स्थितियों का ही चित्रण है। प्रकाश की दूसरी पत्नी निर्मला विक्षिप्तावस्था में उसे कितना भयभीत करती है–

तुम मेरा मुंह बंद करना चाहते हो? मेरा गला घोटना चाहते हो? मुझे मारना चाहते हो? तुम्हें पता है, मैं देवी हूं? यह

मेरे चारों भाई शेर हैं! वे तुम्हें नोच नोचकर खा जाएंगे। उन्हें पता है कि उनकी बहन देवी है।कोई मेरा बुरा चाहेगा,तो वे उसे उठाकर ले जाएंगे। और काल कोठरी में बंद कर देंगे । मेरे बड़े भाई ने अभी अभी नई कार ली है। मैं उसे चिट्ठी लिख दूं..... रक्षा करूंगी।[7] अपने इस वर्तालाप से वह प्रकाश को भयभीत करना चाहती है।

मोहन राकेश के नाटक और कहानियों में सभी चरित्र आधे अधूरेपन से जूझते हुए दिखाई पड़ते हैं।वे सभी लघु मानव हैं जो सामाजिक परिस्थितियों से लड़ते हुए उन्हें बदलना चाहते हैं किन्तु वह उन्हीं समस्याओं से लड़ते लड़ते

टूट जाते हैं। हर व्यक्ति परिस्थितियों का दास होता है इन पर विजय प्राप्त करना उसके हाथ में नहीं है। इस कहानी में भी प्रकाश और बीना दोनों अधूरेपन से ग्रस्त हैं। मोहन राकेश की चरित्र योजना में एक और विशेषता है कि उनके नारी पात्र बहुत अधिक सशक्त एवं निडर निर्णय लेने वाली व आत्मविश्वास से परिपूर्ण हैं। जबकि पुरुष पात्र कुछ कमजोर, संशयग्रस्त और निर्णय लेने में अक्षम हैं। यह स्थिति आधे अधूरे के महेंद्रनाथ और सावित्री में, आषाढ़ का एक दिन के कालिदास और मल्लिका के साथ जितनी है उससे कुछ अधिक इस कहानी के प्रमुख पात्र प्रकाश और बीना में दिखाई देती है। इतना अवश्य है कि इन शहरी मध्यवर्ग के पात्रों में लेखक का कोई हस्तक्षेप नहीं है। लेखक जैसा देख रहा है उसी का यथार्थ चित्रण कर रहा है। इस कहानी में भाषा की प्रयोगशीलता पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है जो इन उदाहरणों के माध्यम से देखी जा सकती हैं। विरोधाभास के भाव को यहां लेखक ने रेखांकित किया है –अतीत के कोहरे में कहीं वह दिन भी था जो साल में अब तक बीत नहीं सका था। शब्दों की आवृत्ति के माध्यम से अर्थ संप्रेषित करने की कोशिश बहुत ही शानदार तरीके से प्रस्तुत करते हैं– बच्चे की पहली वर्षगांठ थी उस दिन – वही उनके जीवन की भी सबसे बड़ी गांठ बन गई थी।[9] लेखक उपमा और प्रतीकों के माध्यम से भी संदेश देने का प्रयास करते हैं। कितना विचित्र था वह क्षण – आकाश से टूटकर गिरे हुए नक्षत्र जैसा ।[10] उसके दिमाग को जैसे कोई छैनी से छीलता रहा [11] प्रकाश को लगा जैसे साया अब बिल्कुल गुम हो गया हो और सामने सिर्फ बादल ही बादल घिरा रह गया हो। ..... उसे लगा कि बादल बीच से फट गया है और चीलों की कई पंक्तियां उस दर्रे में से होकर दूर उड़ी जा रही हैं।[12]

समग्रतः हम कह सकते हैं कि एक और जिंदगी कहानी में सामान्य व्यक्ति की उहापोह वाली उस स्थिति को चित्रित करने का प्रयास किया है जिसे वह खुद समझ नहीं पा रहा है। वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहा है। इस समाज की ऐसी जटिल व्यवस्था में वह अपने आप को सही जगह पर फिट करने का प्रयास कर रहा हैं लेकिन हर स्तर पर उसे किसी न किसी समस्या से जूझना ही पड़ता हैं। यह समस्या केवल कहानी के इन्हीं पत्रों की नहीं है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति कहीं न कहीं इन सभी समस्याओं से अपने आप को घिरा हुआ महसूस कर रहा है।

संदर्भ सूची –

1. एक दुनिया समानांतर संपादक राजेन्द्र यादव छब्बीसवां संस्करण जनवरी 2022 राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17 जगतपुरी दिल्ली –110051पृष्ठ–246–47
2.वही पृष्ठ –249
3. वही पृष्ठ –245
4. वही पृष्ठ –248
5. वही पृष्ठ –246=47
6. वही पृष्ठ –247
7. वही पृष्ठ –245
8. वही पृष्ठ ––245
9. वही पृष्ठ –242
10. वही पृष्ठ –246
11. वही पृष्ठ –263
12. वही पृष्ठ –25